वृत्तचित्र स्क्रीनिंग

(फेसबुक व यू–ट्यूब लाइव)

" भारत की शैलचित्र कला"

(११ जून, २०२०)

आदि दृश्य विभाग

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

नई दिल्ली

वृत्तचित्र स्क्रीनिंग

भारत की शैलचित्र कला

प्रागैतिहासिक शैलचित्र मानव अतीत के सहस्रों वर्ष पूर्व के धरोहर को चित्रात्मक रूप से संजोये हुए जो आने वाली संततियों के लिए एक ऐतिहासिक परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं। अंटार्टिका को छोड़कर लगभग सम्पूर्ण विश्व (एशिया, अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया) से मानव संस्कृति व समाज के उत्तरोत्तर क्रमिक विकास के इन स्वर्णिम शब्दरहित चित्रात्मक गाथा की प्राप्ति होती है। भारतीय उपमहाद्वीप से शैलचित्रों की प्राप्ति बहुतायत रूप में होती है जो लगभग 15000 वर्षों के भारतीय संस्कृति के इतिहास को समेटे हुए है तथा आज भी जिसकी प्रतिछाप भारत के ग्रामीण अंचल में भित्तिचित्रों के रूप में जीवंत है।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग द्वारा भारत की इन्ही प्राचीनतम गाथाओं को शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा आम–जनमानस तक व्यवस्थित रूप से पहुंचाने के लिए 'भारत की शैलचित्र कला' विषय पर एक वृत्तचित्र का विमोचन दिनांक 11 जून 2020 को भारतीय शैलचित्र कला के पितामह डॉ0 श्रीधर वाकणकर के शताब्दी वर्षोतत्सव के समाप्ति के अवसर पर आयोजित किए गए चतुर्थ विष्णु श्रीधर वाकणकर स्मृति व्याख्यान के साथ किया गया।

भारत के भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए संम्पूर्ण भारतवर्ष की शैलचित्र कला को अध्ययन की दृष्टि से छः भागों में विभाजित किया गया है यथा उत्तरी भारत, पूर्वी भारत, पूर्वोत्तर भारत, मध्य भारत, पश्चिमी भारत एवं दक्षिणी भारत, जिसका चित्रण इस वृत्तचित्र में किया गया है।

वृत्तचित्र में सर्वप्रथम उत्तरी भारत के शैलकला के विषय में चित्रण किया गया। उत्तरी क्षेत्र के अंतर्गत लद्दाख, जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड एवं उत्तर प्रदेश राज्यों को सम्मिलित किया गया है। जम्मू–कश्मीर एवं नव गठित राज्य लद्दाख से मुख्यतः शैलोत्कीर्ण रूप में अंकन मिलते हैं जो बड़े–बड़े चट्टानों पर अंकित है जिनमें नवपाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के विषय अंकित है। हिमाचल प्रदेश की स्पिति घाटी से प्राप्त शैलकला लद्दाख से प्राप्त होने वाले विषयों एवं तकनीक का विस्तार है। उत्तराखंड से मुख्यतः चित्रात्मक शैली की शैलकला प्राप्त होते है जिनमें करबद्ध पंक्ति में मानव श्रंखला को नृत्य करते हुए दर्शाया गया है, प्रमुख हैं। उत्तर प्रदेश के दक्षिण–पूर्व में स्थित विंध्यांचल की पहाड़ियों से

प्राप्त शैलाश्रयों से शैलचित्रों की प्राप्ति होती है। सर्वप्रथम शैलचित्रों की खोज इसी क्षेत्र में वर्ष 1867 में सोहागीघाट, मिर्जापुर से कार्लाइल द्वारा की गयी थी।

पूर्वी भारत के अंतर्गत बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल एवं ओडिशा राज्य है। वृत्तचित्र में झारखण्ड एवं ओडिशा से प्राप्त शैलचित्रो को सम्मिलित किया गया। झारखण्ड में मुख्यतः हजारीबाग व चतरा जिले प्रमुख हैं जिनमें प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के विषयों का अंकन है। ओडिशा से प्राप्त अधिकांश शैलचित्रों में ज्यामितीय रेखांकन प्राप्त होते है इनमें कई स्थानों पर पूर्व में किये गए उत्त्कीर्णन में ही रंग को भरकर संयुक्त तकनीक से चित्रण किया गया है, इसके साथ ही मातृत्त्व स्वरूप को दर्शाने के लिए स्त्री–जननांगों का भी चित्रण बहुतायता से हैं।

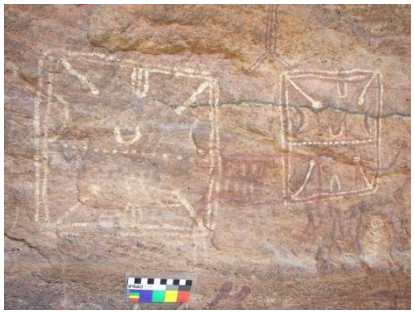
ज्यामितीय अलंकरण, झारखण्ड

स्त्री–जननांग अलंकरण, उड़ीसा

पशु अंकन, बिहार

पूर्वोत्तर क्षेत्र से असम से प्राप्त शैलकला को प्रदर्शित किया गया जिसमें शैलखंडों पर पशुअंकन व ज्यामितीय अंकन प्राप्त होते है जो ऐतिहासिक कालीन है, इन्हें उत्त्कीर्णन तकनीक से बनाया गया है। मध्य क्षेत्र के अंतर्गत छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश आते है। भारत में सबसे अधिक शैलचित्र इसी क्षेत्र से प्राप्त होते है तथा सबसे प्राचीनतम प्रमाण भी मध्य प्रदेश से मिलते हैं। विश्वदाय पुरास्थल भीमबेटका भी मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित है। मध्य प्रदेश से प्राप्त शैलचित्रों के विषयांकन में विविधता दिखाई पड़ती है जो उच्च–पुरापाषाण काल से लेकर मध्यकाल तक के है। छत्तीसगढ़ राज्य के रायगढ़, कांकेर, सरगुजा जिले से शैलचित्र

मिलते है इन शैलचित्रों में अधिकांश ज्यामितीय अलंकरण प्राप्त होते है जो चित्रित व उत्त्कीर्णन–चित्रण संयुक्त तकनीक से बनाये गए है।

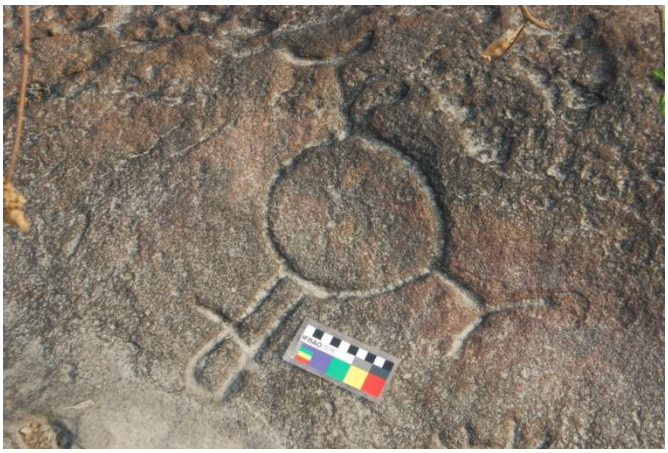

ज्यामितीय अंकन, असम

पशु अंकन, मध्यप्रदेश

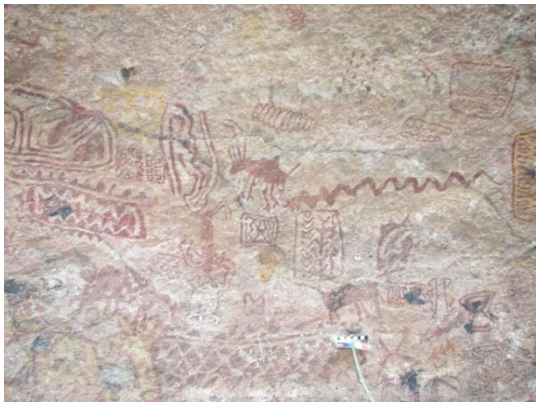

ज्यामितीय अलंकरण, पशु व सर्प चित्रण, छत्तीसगढ़

पश्चिमी भारत के अंतर्गत राजस्थान, गुजरात, गोवा व महाराष्ट्र प्रदेश आते हैं। जिनमें से राजस्थान तथा महाराष्ट्र के शैलचित्रों का दृश्यांकन वृत्तचित्र के माध्यम से किया गया। राजस्थान के अंतर्गत मुख्यतः बूंदी व कोटा के शैलचित्रों को दर्शाया गया है। विषयांकनों में मुख्यतः आखेट दृश्य एवं पशुअंकन है जिनमे बड़ी सींघों वाले जानवरों का अंकन अनेक शैलाश्रयों से प्राप्त होते है। महाराष्ट्र के अंतर्गत नागपुर के समीपवर्ती क्षेत्रों के शैलाश्रयों को दर्शय गया है। यहाँ से भी उत्त्कीर्णन व चित्रण दोनों तकनीक के शैल कला प्राप्त होते हैं। पश्चिमी क्षेत्र से प्राप्त शैलचित्रों की कालावधि मध्यपाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के हैं।

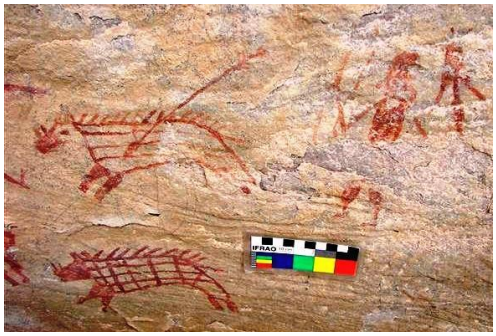

आखेट दृश्य, राजस्थान

पशु अंकन, महाराष्ट्र

अंत में दक्षिण भारत के शैलकला का दृश्यांकन किया गया जिनमें आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटका एवं केरल की शैलकला को प्रदर्शित किया गया। दक्षिण भारत के अंतर्गत अधिकांशतः शैलचित्र उत्त्कीर्णन, चित्रण एवं ब्रशिंग से बनाये हैं।

पशु अंकन, तमिलनाडु

ज्यामितीय उत्त्कीर्णन, केरला

हस्तछाप, आन्ध्रप्रदेश

वृत्तचित्र के अंतर्गत इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के माननीय सदस्य सचिव डॉ0 सच्चिदानन्द जोशी, आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 बी0 एल0 मल्ला एवं श्री ब्लू इमाम जी का साक्षात्कार भी रहा, जहाँ डॉ0 जोशी ने भारतीय शैलचित्र कला की समृद्ध विरासत पर तथा इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा इस क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला, डॉ0 मल्ला ने जम्मू एवं कश्मीर तथा लद्दाख के शैलकला के तकनीक, विषयांकन आदि संक्षिप्त जानकारी प्रदान की, साथ ही श्री ब्लू इमाम जी ने झारखण्ड के शैलचित्रों एवं स्थानीय जनजातियों (मुख्यतः मुंडा जनजाति) के घरों के भित्तिचित्रों का तुलनात्मक नृजातीय–पुरातात्त्विक अध्ययन कर चित्रण की इस परम्परा के जीवंत स्वरूप पर प्रकाश डाला।

डॉ0 दिलीप कुमार सन्त
अनुसंधान अधिकारी
आदि दृश्य विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली